वैश्विक परिप्रेक्ष्य में राम काव्य

डॉ. शीतल
विवेकानंद महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सारांशिका

राम शब्द दो वर्णों से मिलकर बना है रा. म। 'रा' परिपूर्णता तथा 'म' ईश्वर का वाचक है। अर्थात् सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के चर–अचर सभी प्राणियों में एक ही नाम रमता है, वह है राम। वेद, पुराण और शास्त्र जिसकी महिमा गाते है, वह है राम। जो सतचित् और आनंद स्वरूप है। वे पूर्ण ब्रह्म है। समस्त सृष्टि में व्याप्त है। यही ब्रह्म जब अवतार लेकर लीलाएं करता है तो निर्गुण से सगुण हो जाता है। वेद, पुराण, मुनि और पंडित ब्रह्म के निर्गुण और सगुण रूप में कोई भेद नहीं मानते। दशरथ पुत्र के रूप में जन्म लेकर राम संसार को दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से मुक्ति दिलाकर मर्यादा पुरूषोत्तम का आदर्श चरित्र स्थापित करते हैं। जो शक्ति, शील और सौन्दर्य से समान्नित है।

मुख्य बिन्दु : राम काव्य, ब्रह्माण्ड, शास्त्र, आदर्श, वसुधैव–कुटुम्बकम्।

प्रस्तावना

विश्व में सबसे पहले रामकथा लिखने का श्रेय आदिकवि वाल्मीकि को प्राप्त है। और उनकी रामायण रामकथा का आदि स्रोत भी हैं। निषाद के तीर से क्रौञ्च पक्षी का वध हो जाने पर वाल्मीकि के मुख से राम की करूण गाथा बह निकली। इन्होंने राम का चित्रण महामानव के रूप में ही किया। संस्कृत में होने के कारण ये रामायण भारतीय जनजीवन उतना स्थान नहीं बना सकी जितना तुलसीदास की रामचरितमानस। तुलसी ने रामचरितमानस में राम को ब्रह्म का अवतार मानकर उनका मर्यादा पुरूषोत्तम चरित स्थापित किया। वे भगवान शंकर के मुख से रामकथा पार्वती को सुनाते है और रामावतार का कारण भी बताते है। चार युग्मो से रामकथा चलती है – (1) शिव–पार्वती (2) याज्ञवल्वय भारद्वाज (3) काकभुशुण्डि–गरूड (4) तुलसीसंतजन।

तुलसीदास जी ने रामचरित मानस की रचना 16वीं शती में अकबर के शासनकाल में की थी जिसने भारतीय समाज एवं संस्कृति को आधार प्रदान किया। अकबर को भले ही सब भूल जाए लेकिन तुलसी के मानस के राम आज थी जन जन के हृदय में विद्यमान है। तुलसी के सामने वाल्मीकि की रामायण का आदर्श मौजूद था।

''वाल्मीकि तथा तुलसी के युग में पर्याप्त अंतर था। दोनों की मानसिकता तथा सोच में थी वैभिन्नय है। वाल्मीकि राम के पीछे चलते है परन्तु राम तुलसी के पीछे चलते है। वाल्मीकि की रामकथा मानवीय प्राकृतिक तत्वों तथा सहज चारित्रिक विशेषताओं से परिपूर्ण है परन्तु तुलसी को एक प्रतिमान स्थापित करना था जिसे समस्त हिन्दू समाज अपना मार्गदर्शन तथा प्रेरणा बिन्दु मान सके। उसे उन्हें इस रूप में अभिव्यक्ति प्रदान करनी थी। इसलिए तुलसी ने प्रचलित तथा परंपरागत रामकथा में पर्याप्त संशोधन, परिमार्जन एवं परिष्कार किया है।

'वाल्मीकि रामायण' से आरंभ होकर संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंश महाकाव्यों तथा नाटकों, संहिता, उपनिषद् एवं पुराणों तथा महाभारत के अनेक स्थलों पर भी रामकथा का वर्णन मिलता है। आधुनिक भारतीय भाषाओं में भी राम साहित्य उपलब्ध है जैसे बंग्ला में कृत्तिवास की 'रामायण', तमिल में कम्बकृत 'कम्ब रामायण', तेलगु में 'रंग रामायण' और 'भास्कर रामायण' मलयालम में 'दूराम चरित', 'कन्नड़ में' तोरावे रामायण स्वंयभू की 'रामायण पुराण', उड़िया में 'जगन्मोहन रामायण', असमियां में शंकरदेव कृत 'उत्तरकाण्ड' और 'श्रीरामविजय नाटक', गुजराती में नागर की 'रामायण' आदि अनेक रामकथाएं प्रचलित है।'

उत्तर भारत में रामभक्ति का श्रेय आचार्य रामानंद को जाता है। इस परंपरा को तुलसीदास, अग्रदास, ईश्वरदास, लालदास, प्राणचन्द्र चौहान और केशवदास के आगे बढ़ाया। हिन्दी में तुलसीदास कृत 'रामचरित' मानस हिन्दी साहित्य का सर्वप्रमुख महाकाव्य है। रीतिकाल तथा आधुनिक काल में भी रामकाव्य की रचना हुई। यहाँ तक कि कथा साहित्य में भी रामकथा आधुनिक जनमानस के हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ती है।

रामकाव्य का प्रभाव सर्वव्यापी है। विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की प्रेरणा रामकाव्य से ही मिलती हैं। विश्व के सभी प्राणियों के जीवन मूल्यों का सार इसी रामकथा में मिलता है। जो राष्ट्र के प्रति प्रेम भावना और त्याग सिखाना है। पंडितों और विद्वानों से लेकर साधारण जन तक रामकथा का आनंद समान भाव से लेते हैं। तभी तो भारत के हर घर में 'रामचरितमानस' मिलती है। ग्रामीण से लेकर शहरों तक में रामलीलाओं का उत्सव मनाया जाता है। रामचरितमानस के सुंदरकाण्ड की चौपाईयों का गायन हर घर में होता है। विदेशी भाषाओं में भी रामकाव्य मिलता है।

राम सर्वव्यापक है। समस्त ब्रह्माण्ड के स्वामी है। मायापति है। उनकी कथा अनंत, उनकी गाथा अनंत और गुण अनंत है। योगी, सिद्धि, मुनि, मुड़ते जिनका ध्यान करते है। वेद, पुराण, शास्त्र नेति नेति कहकर जिनकी कीर्ति गाते हैं वे श्रीराम मनुष्य के जीवन के सुख–दुख झेलते हुए अपने स्वरूप को बदले नहीं है।

तुलसी के मानस के राम, उनका जीवन, उनका पारिवारिक प्रेम, त्याग की भावना, गुरू के प्रति आदर, प्रजा के प्रति प्रेम आदि भाव आदर्श रूप स्थापित करते हैं। यहां तक कि वशिष्ट, विश्वामित्र जैसे विद्वान, कोल किरात भील आदि आदिवासी, निषाद, शबरी आदि शूद्र, वानर आदि भी अपनी अपनी स्थिति के अनुसार आदर्श चरित्र स्थापित करते है।

भारत के बाहर के देशों जैसे थाईलैंड, मलेशिया, बर्मा, म्यांमार, इंडोनेशिया, चीन, जापान, श्रीलंका, वियतनाम, कनाड़ा, बेल्जियम, लंदन, इटली, आदि में भी रामकथा प्रचलित है।

थाइलैंड : थाईलैंड की राष्ट्रीय पुस्तक 'रामायण' है जिसे थाई भाषा में 'रामकियन' कहा जाता है। यहां के राजा स्वयं को

श्रीराम के वंशज मानते थे। इसलिए राज्याभिषेक के समय सभी राजाओं को राम की उपाधि दी जाती हैं। यहां रामकथा पर आधारित नाटक और नृत्य का आयोजन भी होता रहता है। अंतर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन थाईलैंड की राजधानी अयुत्या में होता है। ''थाईवासी परंपरागत रूप से रामकथा से परिचित थे। उस समय उसका नाम स्याम था। तेरहवीं शताब्दी में राम वहां की जनता के नायक के रूप में प्रतिष्ठित हो गए थे किन्तु रामकथा पर आधारित सुविकसित साहित्य अठारहवीं शताब्दी में ही उपलब्ध होता है। राजा बोरोमकोन (1732–58 ई.) की समकालीन रचनाओं में रामकथा के पात्रों तथा घटनाओं का उल्लेख हुआ है। उन्होंने थाई भाषा में रामायण को छंदोबद्ध किया जिसके चार खंडों में 2012 पद है। पुनः सम्राट राम प्रथम (1782–1809 ई) ने कवियों के सहयोग से रामायण की रचना करवाई उसमें 50177 पद है। यही थाई भाषा का पूर्ण रामायण है। राम द्वितीय (1809–24 ई.) ने एक संक्षिप्त रामायण की रचना की जिसमें 14300 पद है। तदुपरांत राम चतुर्थ ने स्वयं यहां में रामायण की रचना की जिसमें 1664 पद है। इसके अतरिक्त थाईलैंड में रामकथा पर आधारित अनेक कृतियां है।''

इण्डोनेशिया : यहाँ की जनता अधिकतर मुसलमान है और उनका धर्म इस्लाम है किन्तु इनकी संस्कृति में रामायण की छाप है। जिस पर आधारित रामलीला यहां कभी भी देखी जा सकती है। बाली द्वीप में रामायण से संबंधित सांस्कृतिक कार्यक्रम होते है। सीता हरण और मारीच मृत्यु जैसे अदभूत नृत्य भी पद्य देखने को मिलते है। यहां तक कि इन लोगों के नाम भी रामायण और महाभारत के सुपात्रों पर आधारित होते है। अगस्त 1971 में एशियाई रामायण महोत्सव यही हुआ था। यहां की प्राचीनतम 'कृति' रामायण काकावीन' है जो कावी भाषा में तथा छब्बीस अध्यायों में विभाजित है। इसके अतिरिक्त यहां और भी महाकाव्य है जैसे उत्तरकांड, गद्य, चरित रामायण, सेरतकांड, राम केलिंग और सेरीनाम आदि।

मलेशिया : मलेशिया में मुख्य रूप से इस्लामी लोग है। फिर भी यहां रामायण का बहुत महत्व है। यहां के बोडलियन पुस्तकालय में मलय रामायण की प्राचीनतम कृति सन् 1633 में जमा कराई गई थी। यहाँ रामकथा से संबंधित नाटक और नृत्य भी आयोजित किए जाते है। ''यहां की रामायन का नाम 'देकायत सेरी रामा' है। इस रामायण पर इस्लामी प्रभाव स्पष्ट हे पर श्रीराम विष्णु भगवान के अवतार के रूप में ही चित्रित है और 'हेकायत सेरी रामा' ही नहीं बल्कि 'हेकायत सेरी रावन' भी प्रचलित है जिसमें रावण का चरित्र दर्शाया गया है। इस पर इस्लाम का आधक प्रभाव है। 'हेकायत सेरी रामा' तो बाल्मीकि रामायण के अधिक निकट है और अनेक विद्वानों का भी यह मत है।

वर्मा : बर्मा में रामायण का प्रभाव देखने को मिल जाता है। यहां रामाण को 'यमयान' कहा जाता है। जिसे ये लोग अपना राष्ट्रीय महाकाव्य मानते है। यहां बर्मा भाषा में राम को यम और सीता को 'मी थीडा' कहा जाता है।

जापान : जापान में अनेक आध्यात्मिक और धार्मिक संस्थाएं है जो आध्यात्मिक विचारों का प्रसार जापान तथा उसके बाहर भी करती है। 'होबुत्सुशू' नामक कथा संग्रह में सक्षिप्त रामकथा में श्रीराम का वर्णन मिलता है। इसकी रचना 12वीं शताब्दी में तैरानो यसुचोरी ने की थी।

श्रीलंका : श्रीलंका में कोहंवा देवता की पूजा होती है। कुमार दास लंका के राजा थे जिन्होंने 'जानकीहरण' की रचना की जो संस्कृत का उत्कृष्ट महाकाव्य है तथा कालिदास की रघुवंश की परंपरा के अंतर्गत माना जाता है। यह वाल्मीकि रामायण पर आधारित है। यहां स्थित रामसेतु रामायण का सांस्कृतिक जीवंत प्रमाण है।

नेपाल : नेपाल में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहां रामायण नहीं पहुंची हो। यहाँ भानुभक्त कृत 'रामायण' को तुलसीदास के रामचरितमानस के समान ही माना जाता है। यहां के लोग भानुभक्त कृत रामायण को ही आदि रामायण मानते है। इसकी कथा अध्यात्म रामायण पर आधारित है। यहां के प्शुपति मंदिर में धनुष और वरदा में रामकी मूर्ति देखने को मिलती है।

मॉरीशस : मॉरीशस में बहुत से मंदिर है जहां श्रीराम, शिव और हनुमान जी की पूजा होती है। शिवरात्रि पर यहां मेला लगता है। रामायण और हनुमान चलीसा का पाठ भी होता है। यहां एक विशाल पुस्तकालय है जहां रामायण पर शोध के लिए अनेक संदर्भ ग्रंथ उपलब्ध है। रामायण को स्कूली शिक्षा पाठ्यक्रम का भी हिस्सा बनाया गया है।

इनके अतिरिक्त कम्बोडिया में रामकेर रामकेति, फिलीपीन्स में महारादिया लावना, लाओस में फालम, तिब्बत में अनामक जातकतथा मंगोलिया में भी रामकथा संबंधी ग्रन्थ मिलते है। रामकथा विश्व के समग्र साहित्य का अंग बन गई है।

अयोध्या में स्थित राम मंदिर के ध्वस्त होने के बाद पुनः राम मंदिर निर्माण के लिए संघर्ष स्वतंत्रता से पूर्व से ही चल रहा था। 1980 के दशक में राम मंदिर बनाने का अभियान शुरू हुआ फरवरी 1986 में श्री राम जन्म भूमि पर लगा ताला खोलने का निर्णय दिया गया। और 10 नवंबर 1989 को शिलान्यास किया गया। सन् 1983 से लेकर 2020 तक विरोधों एवं संघर्षों के विभिन्न पड़ावों को पार करने के बाद मंजिल प्राप्त हुई।''

अगस्त 2020 को अयोध्या में राम मंदिर का भूमि पूजन कार्यक्रम एक ऐतिहासिक एवं शुभ क्षण था। यही वो दिन का जिसका भारत नही बल्कि संपूर्ण संसार के रामभक्त प्रतीक्षा कर रहे थे। यह कोई साधारण दिन नहीं था बल्कि भारत वासियों की सदियों की तपस्या, परिश्रम और लगन के परिणाम का दिवस था। 22 जनवरी 2024 का दिन भारत के लिए ऐतिहासिक दिन होगा जब राम मंदिर राष्ट्र मंदिर के रूप में प्रसिद्ध होगा और समस्त भारतवासी गर्व का अनुभव करेंगें तथा विश्व वसुद्यैव कुटुम्बकम की ओर बढ़ेगा। यह राम और रामकाव्य का ही प्रताप है जो समस्त विश्व को एक सूत्र में बांध रहा है।

सन्दर्भ सूची :

1. **तुलसी मानस भारती** : श्री गोरे लाल शुक्ल, आदिकवि वाल्मीकि और **महाकवि तुलसी** : डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे, वर्ष 1998, पृ. 13।
2. **अक्षरवार्ता इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल** : सुमन रानीः वैश्विक परिप्रेक्ष्य में रामकाव्य और राम का स्वरूप, फरवरी 2020।
3. रामायण का विश्व व्यापी व्यक्तित्व लल्लन प्रसाद व्यास, बी आर पब्लिशिंग कापोरेशन, दिल्ली, संस्करण 1996, पृ. 98।
4. **राममंदिर राष्ट्रमदिर** : एक साझी विरासत – प्रो. गीता सिंह, आरिफ खान भारती, किताबवाले, नई दिल्ली, पृ. 37।